

इतः शशमकाः त्वानुग्रहः ॥ यिनहाला ॥ प्रद्यादि ॥ ॐ यावच्युर्कमाह
 शममिनिर्निर्लावहा ॥ गवत्सु विलेका नवनल्लायहिहव ॥ थन
 गधसंकल्प ॥ थनथवमज्ञागधंदिनु तियाय ॥ धूयदियनयद्य ॥ रूप
 काप्रपयमंधनक ॥ समयकाय ॥ थवरसुआकुसकाय ॥ आसलिका
 यवलि ॥ थय ॥ सूर्यसाक्षिथय ॥ थययाकाथयनंक्षायाकाद्रिथंमा
 त ॥ ॐ गिनवरात्रम्वनविधिरुल ॥ अथमाश्रुमिपूजा ॥ ॥

॥ ॐ नमः श्रीवद्वि कारये ॥ ॥ अथ माहाज्जमि पूजा ॥ ॥ खड्गसुनथा
यसपागयनवाय ॥ अष्टपत्रपत्रवाय ॥ खड्गकायपात्रवाय ॥ कलसः कू
यकं सिद्धिम् पञ्चवलिः गृवलिः सग्ननः माहाकालः कथः वा मृदुवलिवा
यः वलिमालकाग्रयः रुद्रसिवाय ॥ रुद्रिलिवाय ॥ श्रानयावकचन्दनसिं
हः रुद्रः रुद्रः रुद्रमकायानवदू मध्यकर्तृपत्रकाः पञ्चपत्रका माल
काकल ॥

॥ ॐ नमः श्रीवद्वि कारये ॥ ॥ अथ माहाज्जमि पूजा ॥ ॥ खड्गसुनथाय
सपागयनवाय ॥ अष्टपत्रपत्रवाय ॥ खड्गकायपात्रवाय ॥ कलसः कू
कः प्रयकं सिद्धिम् पञ्चवलिः गृवलिः सग्ननः माहाकालः कथः वा मृदु
वलिवायः वलिमालकाग्रय ॥ रुद्रसिवाय ॥ ॥ रुद्रिलिवाय ॥ ॥ ॐ ॥
लखनहायः चन्दनः सिन्दूरः दृष्टिः रुद्रमकायानवदू मध्यकर्तृपत्रकाः प
ञ्चपत्रका मालकाकल ॥ यलरुलकावः स्निहललल ॥ ॐ अथ ॥

गवताहत्यादि॥ अथ॥ ॐ यावच्चतुर्कमालगा. महि अग्नि कला वह. गाव
त्वत्तुचिनें कासं चनत्वा यत्किना एव. स्तिना एव महादवी. दवाना य
नकाधिये. यावद्दममिपर्यन्तं. गावत्वं च स्तिनामा चनेगा॥ गयकाका
वगय॥ सर्वलक्ष्मीप्रदश्चथं. सर्वसकृदुपायय. अष्टादिदमम्या
कं. शर्गदवी स्तिना एव॥ अस्मत्स्वप्रसिद्धिजय कामुनार्थमाहा अष्ट
मिपार्थद. स्वप्रत्वा यत्किना एव॥ ३॥ थनदगुलियाय॥ नासिय

॥ ॐ शंकां आत्मगत्वा यत्वाहा॥ ॐ शंकां विद्यागत्वा यत्वाहा॥ ॐ शंकां
सिवगत्वा यत्वाहा॥ लंखगालगा॥ अथादि॥ अजमानस्य. श्रीश्वा
नरुमातीदवी. स्वप्रसिद्धिआयननिमित्तार्थं श्रीहूर्याय अर्घनम
॥ ॐ शंकां वन्दनाकृत्पूष्यनम॥ नहुलदयकगुत्तृपूजा॥ ॐ शंकां अस्वधुमधु
लाकालं. बाफं जनयमाचनं. गत्तुदं दनिनं जनगत्तु श्रीगुत्तृयनम
॥ आसनगय॥ वलिस. पाग्रह. थवग॥ अस्ववमिन॥ ॐ शंकां अज

पृष्ठ ॥ खानसुपि पात्रकय प्रेन जंभुकाय रुद्र ॥

१ॐ नमः श्री नृसिंहाय नमः ॥ ॥ शिवजी नमः ॥

ॐ नमः श्री नृसिंहाय नमः ॥ अथ आखातस्य विधिः ॥ न कस्य
सम्पत् पूजा ॥ अद्यादि ॥ पूजा गोपल ॥ श्री संसृता ॥ सिद्धि मन्त्र ॥
नमः श्री नृसिंहाय नमः ॥ अद्यादि ॥ गङ्गा नमः ॥ अमृता नमः ॥ पयो पुत्रा नमः ॥ देवा
य नमः ॥ श्री हिरण्याय नमः ॥ वाक् ॥ देव त्वं गल ह्वानं पञ्चमृग ह्वानं
अलि ह्वानं ॥ धलिवक्ति हलं हृथ गवः नाड्यं गवा दालं मृगं ॥ शृगं सिंह
लं दृष्टिं गङ्गा मका ह्वानं कदायगा का पञ्चमृग का अद्यादि नमः ॥

उगा वलि आदनं समस्त वाय ॥ आय मनः ॥ अद्यादि ॥ वाक् ॥ गु
हन मृका ग ॥ अथ उमठुला काल आदि ॥ ॥ प्राप्तायां मृकायां ॥
॥ ॐ हरे हरे अनेन प्राप्तायां म ॥ ॥ गगनायां मृकायां ॥ ॥ ॐ ॥
ॐ ॐ ॐ अत्रा मरुट ॥ कतः अथ न ॥ ॥ ॐ ॐ ॐ अत्राया नमः ॥
पाय ॥ ॐ ॐ ॐ अत्राया नमः ॥ पाय ॥ ॐ ॐ ॐ मध्यमायां नमः ॥ पाय ॥
॥ ॐ ॐ ॐ अत्राया नमः ॥ पाय ॥ ॐ ॐ ॐ अत्राया नमः ॥ पाय ॥

॥ ॐ हूं कं ४ कृत् ७७ वृष्टाया नमः ४ पा ॥ ॥ ॐ हूं कं दद्याय न
मः ४ पा ॥ ॐ हूं कं मित्रसखा हा पा ॥ ॐ हूं कं मित्राये व द्या ॥
॥ ॐ हूं कं कवचाय हूं पा ॥ ॐ हूं कं नमः ७७ याय वाष द्या ॥ ॐ हूं कं
४ कृत् ७७ याय रु द्या ॥ ॥ ॐ हूं कं वृष्टाया ॥ ७७ वक्रया ॥ ॐ हूं कं
कं उर्वकाय नमः ४ पा ॥ ॐ हूं कं उर्वकाय नमः ४ पा ॥ ॐ
हूं कं पूर्वकाय नमः ४ पा ॥ ॐ हूं कं दक्षिणकाय नमः ४ पा ॥

॥ ॐ हूं कं उर्वकाय नमः ४ पा ॥ ॐ हूं कं पश्चिमकाय नमः
४ पा ॥ ॐ हूं कं कृत् ७७ याय रु द्या ॥ ॐ हूं कं वृष्टाया ॥ ७७ वक्रया ॥ ॐ हूं कं
आधमकय नमः ४ पा ॥ ॐ हूं कं जनेकाय नमः ४ पा ॥ ॐ हूं कं द्याया ॥ ॐ हूं कं नाला
या ॥ ॐ हूं कं पमाया ॥ ॐ हूं कं यथाया ॥ ॐ हूं कं मताया ॥ ॐ हूं कं कर्त्तुकाया ॥ ॐ हूं कं वृष्ट
मनुलाया ॥ ॐ हूं कं हृष्यमदलाया ॥ ॐ हूं कं जनिमदलाया ॥ ॐ हूं कं साममनुलाया
॥ ॐ हूं कं भक्तिमदलाया ॥ ॐ हूं कं प्रगसनाया ॥ ॐ हूं कं वृष्टासनाया ॥ ॐ हूं कं द्या

॥ यथा सनायनमः पादू ॥ ॥ नमो ध्यानं ॥ ॥ ॐ ह्रीं प्रकवकुलिनशुक्ल नागक
कुलमहिम्नं नगशतं यदुत्तमं ॥ नगवर्षुत्तमं नगिम् ॥ हातालेकातहवाङ्
नागशतं पवीरिनं वायुवर्षुत्तमं धीम् ॥ सिंहवर्षुत्तमं नगिम् ॥ ॐ नगि ॥ ४ वादमे
रुक् ॥ गलुयं पत्रमम् ॥ उर्ध्ववाक्यवृत्त्युत्तमं ॥ ७ मन्त्रिभूतलमवयव ॥ त्रिदलीमगव
ज ॥ कर्त्तिकावाक्यमालिका ॥ गधवानं वृत्त्युत्तमं ॥ गव्यांगं यममवयव ॥ नग
धनुस्त्रिधाद्य ॥ कयालं ॥ कसंभुतं ॥ ॥ महप्रसूर्यसंकासं ॥ कलादित्रयवृत्त

य ॥ वृषादुत्तमं स्यात् ॥ वृत्त्युत्तमं संप्रग ॥ वाद्यमानं नहि कसं ॥ महाकाल ॥
वामक ॥ गधवर्षुत्तमं नगिम् ॥ दवाहृतमनातमे ॥ गमयमाना मृदायुक् ॥ वाद्यमानं
नयांगं ॥ नानन्दमकिमं युक् ॥ मपुतागलस्यिगं ॥ ऐतवं वृत्त्युत्तमं ॥ सचीनका
ला ॥ नगिम् ॥ वृत्त्युत्तमं महादेवं ॥ सुधैवगदोर्ध्वं ॥ प्रवक्ष्यामीमहादेवं ॥ नागका
र्यसिद्धय ॥ मानवा मां हि गार्थय ॥ गर्वहृतिगनासंनं ॥ ॥ ध्यानपूषां नमः ॥ ॥

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

[illegible]

ॐ ह्रीं कौं ह्र्यादि नमः ॥ ॐ ह्रीं कौं गिरा नमः ॥ ॐ
 ह्रीं कौं सिंहाय नमः ॥ ॐ ह्रीं कौं कवचाय नमः ॥ ॐ ह्रीं कौं नैऋत्याय नमः ॥
 ॐ ह्रीं कौं ईश्वराय नमः ॥ ॐ ह्रीं कौं ईश्वराय नमः ॥ ॐ ह्रीं कौं ईश्वराय नमः ॥
 ॐ ह्रीं कौं ईश्वराय नमः ॥ ॐ ह्रीं कौं ईश्वराय नमः ॥ ॐ ह्रीं कौं ईश्वराय नमः ॥
 ॐ ह्रीं कौं ईश्वराय नमः ॥ ॐ ह्रीं कौं ईश्वराय नमः ॥ ॐ ह्रीं कौं ईश्वराय नमः ॥
 ॐ ह्रीं कौं ईश्वराय नमः ॥ ॐ ह्रीं कौं ईश्वराय नमः ॥ ॐ ह्रीं कौं ईश्वराय नमः ॥
 ॐ ह्रीं कौं ईश्वराय नमः ॥ ॐ ह्रीं कौं ईश्वराय नमः ॥ ॐ ह्रीं कौं ईश्वराय नमः ॥

वक्रयास॥ गङ्गाधारा॥ ॐ ह्रीं आधाराय नमः॥ वासु॥ ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः॥ ॐ ह्रीं
कदाय नमः॥ ॐ ह्रीं नागाय नमः॥ ॐ ह्रीं पद्माय॥ ॐ ह्रीं योगाय॥ ॐ ह्रीं कल्याणाय॥ ॐ ह्रीं
कर्तुकाय॥ ॐ ह्रीं वन्द्यमहलाय॥ ॐ ह्रीं हर्षमहलाय॥ ॐ ह्रीं अग्निमहलाय॥ ॐ
ह्रीं साममहलाय॥ ॐ ह्रीं भक्तिमहलाय॥ ॐ ह्रीं प्रकाशनाय॥ ॐ ह्रीं दृष्टान्ताय॥ ॐ ह्रीं
वृत्त्यन्ताय नमः॥ ॥ गङ्गाधारा॥ ॥ ॐ ह्रीं वक्रवक्रविनयकृत् नागककुल
पद्मिनीं गङ्गाशङ्करचन्द्रकान्तं गङ्गावर्धनं ह्रीं नमः॥ नागयक्षाय वी

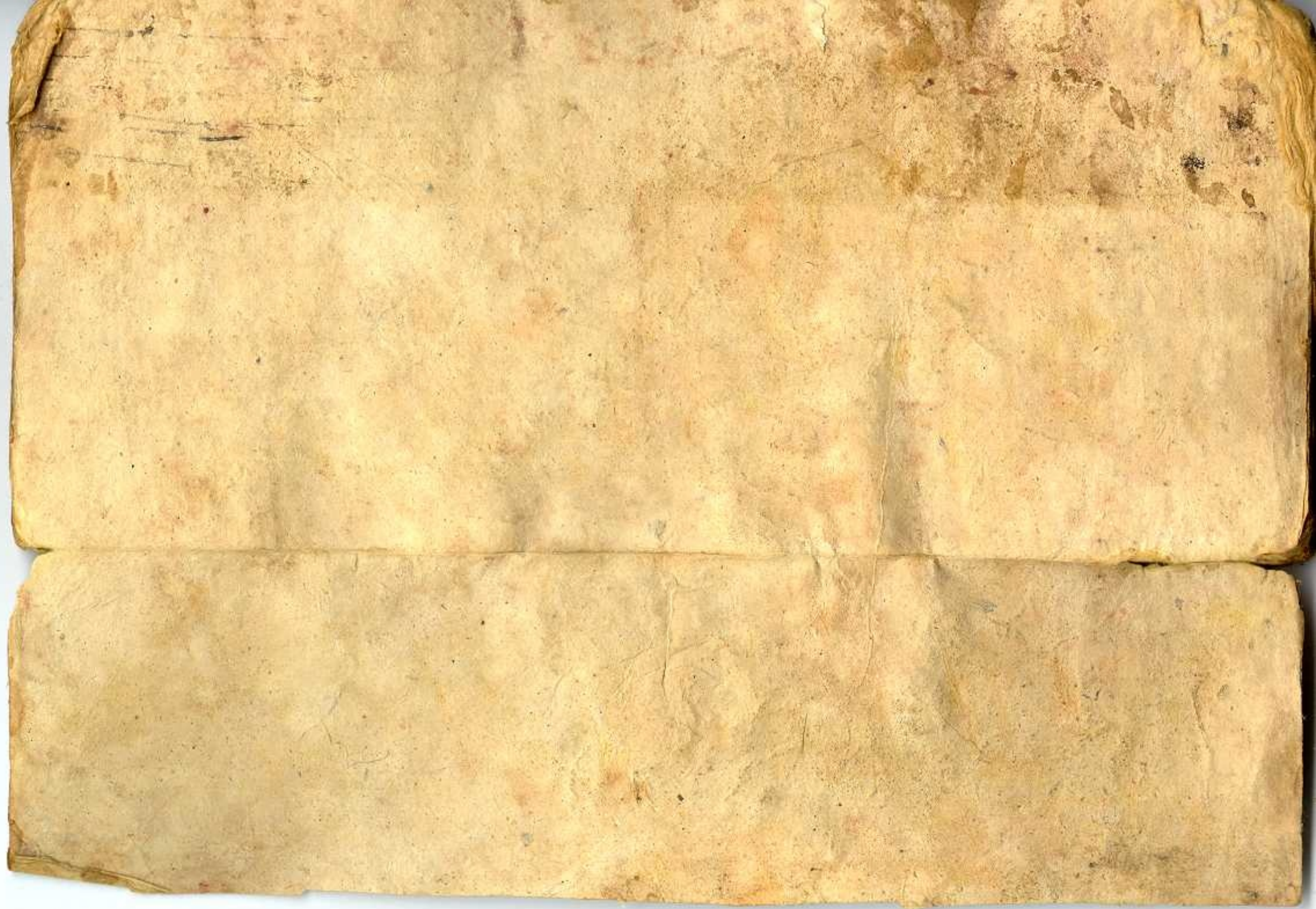
गिनः वायुवर्मपत्री धर्मः सिंहवर्मा रुत्रीयकं बुधारिः शशाङ्कमेयूकं गङ्गावपतम
ध्वजं उद्धवास्तव्यरूपं उमत्रिपुल्लमवचः प्रिदुष्टीसुतवक्रकृत् कर्तुका वा कृमासि
का॥ गङ्गाधाराय नमः॥ वत्साय नमः॥ नागधनुराधाराय नमः॥ कपालकृत् नमः॥ सह
प्रहर्षसंकाशं कलारिप्रकृत् वक्रय॥ दृष्टान्तधर्ममात्मनः वृत्त्यङ्गीकृतसंयुक्तं वाद्यमानं नहि
कृतं माहाकालकृत् वामकं गङ्गावर्धनं किनरगले देवास्तमनात्मनः गङ्गाधाराय नमः॥
वाद्यमानं लयागकं आनन्दुभक्तिसंयुक्तं मप्ताभागदामविनं रौतवं नृत्त्यरूपकृत् सर्वान

कालः ॥ अहिरं नृपमानं महादवं सर्वद्वयगतं तद्वत् ॥ एवं ध्यात्वा महादवं नागकार्यं स हि
 द्वयमानं वा माहिगार्धयः सर्वेश्वरं ज्ञापनं ॥ ॥ ध्यानं पृष्ठं नमः ॥ पादः ॥ आवाहनादि हि
 पनः निधनं ॥ स निधनं ॥ स निधनं ॥ स निधनं ॥ स निधनं ॥ स निधनं ॥ स निधनं ॥ स निधनं ॥ स निधनं ॥
 नमः प्रालम्भनं ॥ ॥ ॐ नमः नृपमानं महादवं सर्वद्वयगतं तद्वत् ॥ एवं ध्यात्वा महादवं नागकार्यं स हि
 मः ॥ अवधर्च्यं त्वानियं ॥ आवमनीयं ॥ चतुर्न ॥ स इति ॥ कृत् ॥ पूषा स मर्षा यामिनमा
 ॥ यथाकालि ॥ ॥ ॐ नमः नृपमानं महादवं सर्वद्वयगतं तद्वत् ॥ एवं ध्यात्वा महादवं नागकार्यं स हि

यां ॥ लिपूषं पादः ॥ वलि ॥ ॥ ॐ जां ह द या दिन म ४ ॥ ॐ या दि स ४ ॥ ॐ ग य ४
 वक्र पूरु नं ॥ ॐ नमः स धा या ग य न म ४ पादः ॥ ॐ नमः वे वा म द वा य ॥ ॐ नमः यं द त्प न
 वा य ॥ ॐ नमः हं धा ग य ॥ ॐ नमः कं धी म न व क्रा य ॥ ॥ ॐ गि व क्रा पू र्जा ॥ ॥ ॐ
 नमः जां धा कि नि या गि ह तु क रै त वा य न म ४ पादः ॥ ॐ नमः गं गं कि नि या गि नि धि यं
 ग क रै त वा य ॥ ॐ नमः लो कं कि नि या गि नि काला क रै त वा य न म ॥ अ नि व ग ल र
 ग वा य ॥ ॐ नमः का वि नि या गि नि धि यं क रै त वा य ॥ ॐ नमः सां कि नि या गि नि काला

कृतेन वा॥ ॐ ह्रीं ह्रीं निधामिनि॥ ॥ ग कृतेन वा॥ ॐ ह्रीं यां या किनि यागिनि ॥ ॥
दरेन वा॥ ॐ ह्रीं कौ॥ एव न यागिनि रीम नूयतेन वा॥ पूर्वादि ॐ सा ना कं॥ ॥ गगा व
दपूजा॥ ॐ ह्रीं मं॥ गदाय नम॥ ॐ ह्रीं य मूर्धदाय नम॥ ॐ ह्रीं सामयदाय नम॥ ॐ ह्रीं धृ
र्वदाय नम॥ ॐ ह्रीं दि उगादि॥ ॐ ह्रीं रुगयूगय नम॥ ॐ ह्रीं युगयूगय नम॥ ॐ ह्रीं
वापतयूगय नम॥ ॐ ह्रीं कलिपूगय नम॥ ॐ ह्रीं जगयादिमा ना कं॥ ॥ ॐ ह्रीं कौं जसि
गंगतेन वा॥ उक्ता ही भक्ति सहि गाय पाप॥ ॐ ह्रीं कौं नूतेन वा॥ कंसा हं वरी भक्ति

सहि गाय पाप॥ ॐ ह्रीं कौं वहुतेन वा॥ चं को मारी भक्ति सहि गाय पाप॥ ॐ ह्रीं कौं का
धतेन वा॥ टं वे प्रवी भक्ति सहि गाय पाप॥ ॐ ह्रीं कौं उम कृतेन वा॥ गं वा गा ही भक्ति
सहि गाय पाप॥ ॐ ह्रीं कौं कया लतेन वा॥ यं ॐ डा ही भक्ति सहि गाय पाप॥ ॐ ह्रीं कौं
री वनतेन वा॥ यं वा मूधु भक्ति सहि गाय पाप॥ ॐ ह्रीं कौं संहारतेन वा॥ सं मा हा
श्री भक्ति सहि गाय पाप॥ पूर्वादि ॐ सा ना कं॥ ॐ ह्रीं धर्मा य नम॥ ॐ ह्रीं दाना य न
म॥ ॐ ह्रीं वेता हा य नम॥ ॐ ह्रीं धर्मा य नम॥ ॐ ह्रीं अधर्मा य नम॥ ॐ ह्रीं अज्ञाना य



1141 1/1 1/1 1/1 1/1

I	2556
R102 1/1 1/1 1/1 1/1	

ASHA ARCHIVES

नमः॥ ॐ ह्रीं अवेना हा य न मः॥ ॐ ह्रीं अने म र्णा य न मः॥ ॥ आ॥ न या दि व रु दि कू पु न पू
ही न रु दि कू उ रु ग न कं॥ ॥ ॐ ह्रीं वा म ना य॥ ॐ ह्रीं अ षा र्णा॥ ॐ ह्रीं तू षो॥ ॐ ह्रीं का
ल्यो॥ ॐ ह्रीं क ल वि क र्णो यो॥ ॐ ह्रीं व ल पि क र्णो यो॥ ॐ ह्रीं व ल म म थि न्यो॥ ॐ ह्रीं स र्व त
रु द म न्यो॥ ॐ ह्रीं म न म न्ये न म णा र्णा॥ प र्वा दि म ध्या कं॥ ॥ ॐ ह्रीं ॐ का म क य॥
ॐ ह्रीं ह न म क य॥ ॐ ह्रीं क र्ण म क य न न पा र्णा॥ म ध्या॥ ॐ ह्रीं ॐ ॐ द्रा य न प र्णा
॥ ॐ ह्रीं ॐ अ न य॥ ॐ ह्रीं ॐ अ न य॥ ॐ ह्रीं ॐ नै म र्णा य॥ ॐ ह्रीं ॐ व र्ण ना य॥ ॐ ह्रीं ॐ

[illegible]

स्वप्नरायनमो योगियगंगा यतिस्त्रिदशमापयति सिद्धिदहि स्वाहा ॥ वलि ॥ नो ज्ञेय
॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं स्रष्टुमहा ऐत वाय धर्म भक्ति सहि गाय भव गत्र स्वाहा ॥ वलि
॥ ॐ नमानम ८ मिवा य गाव्ये नम ॥ वलि ॥ भक्त सया ॥ २ ॥ पूर्वादिन्वी भ
नक्त ॥ य ॥ वलि ॥ ॥ ॐ ह्रीं कृष्णानन्दमक्ति ऐतवानन्दवीनाधीपकय धृति ॥ श्री
महाविद्यानाम्न्युपनी नृत्यलक्ष्मी सहि गाय यं पा ॥ वलि ॥ पृथं पा ॥ वलि
॥ ॥ ॐ ह्रीं कृष्णो विपुल सुन्द यं नम ८ पा ॥ वलि ॥ नृत्यमृज दर्शन यं वि

द्विप्या ॥ ॥ ॐ गितुयमत्र पूजा ॥ ॥ अथ नन्दि पूजनं ॥ न्यास ॥ नां ददयादि
शाश्वत ॥ अथात्रादि ॥ यगप मासनायनम ॥ ध्यान ॥ पूर्वादिन्वी भक्त
ककाय ननु कृष्ण लं विदुः ॥ यगो वाशमानां मृदङ्गं च वं रूपमहात्मना न
दिन दान पात्रक ॥ ध्यान पूषं नम ॥ यथा ॥ वलि ॥ ॐ ह्रीं नष्टि न महा ऐतव मृदङ्ग यग
या ॥ वलि ॥ पृथं पा ॥ वलि ॥ नां ददयादि ॥ वलि ॥ ॐ ह्रीं स्रष्टुमहा ॥ ॐ गितुय
पूजा ॥ ॥ अथ मूल देवस्य वा न्या ॥ महाकाल पूजनं ॥ न्यास ॥ नां ददयादि कत्र वृष्ट ॥

॥ आध्यात्मिकादि ॥ आध्यात्मिकादि ॥ कथनमपाय ॥ अनन्तनायपाय ॥ कदासनायपाय ॥ नाता
सनायपाय ॥ पनासनायपाय ॥ यथासनायपाय ॥ कथनासनायपाय ॥ कथिका
सनायपाय ॥ वधुमधुलासनायपाय ॥ सूर्यमधुलायपाय ॥ अग्निमधुलायपाय
॥ अथममधुलायपाय ॥ अकिमधुलायपाय ॥ अगनासनायपाय ॥ ध्यान ॥ ॥ वयुर्वा
शक्तिमतामधुपीनामधुमनाहन् ॥ कर्तव्यमधुमनाहन् ॥ कर्तव्यमधुमनाहन् ॥ मधुमालात्रिलावन ॥
मृदि कंवेव कंवेव ॥ मृद्वमनाहन् ॥ कर्तव्यमधुमनाहन् ॥ कर्तव्यमधुमनाहन् ॥ कर्तव्यमधुमनाहन् ॥

॥ ध्यानपुष्पानामा ॥ उपाय ॥ लि ॥ ॐ नमो महाकालाय ॥ महादेवगुरुय ॥ युया ॥ पुष्पति
पुष्पपाय ॥ वलि ॥ माददयादि ॥ कनष ॥ उपाय ॥ वलि ॥ यि ॥ पूलमृदा ॥ ॐ नमो महाक
लपूजा ॥ देवताय ॥ कथनालपूजा ॥ न्यास ॥ ॐ नमो महाकालाय ॥ आसना ॥ आध्यात्मिका
दि ॥ पाय ॥ युया ॥ पुष्पति ॥ ॐ नमो महाकालाय ॥ कथनालपूजा ॥ युया ॥ पुष्पति ॥ पुष्पपाय ॥ वलि
॥ कर्तव्यमधुमनाहन् ॥ कर्तव्यमधुमनाहन् ॥ कर्तव्यमधुमनाहन् ॥ कर्तव्यमधुमनाहन् ॥ कर्तव्यमधुमनाहन् ॥
सुदकि ॥ देवगुरुनाथपूजन ॥ न्यास ॥ ॐ नमो महाकालाय ॥ आध्यात्मिकादिपाय ॥ मयूरा

[illegible]

सहस्रानन्दनपद्मनाभः वायुमिका वायुसुखायामयपद्मसुखगानननिचत्रगगा
जः प्रपुष्प एगदि माहाविहादिददः कमकलसहिगः पापुवापिसुवच्छे ॥ १ ॥
तदमागसिद्धिचक्रः उदसदमदगः कोनिकश्रीकृतामाः ग्यहनाकनरहाः
ममनमनमयः सावयनिभदही ॥ मागंगीगिबुयो १० गमयगमहनाः मूलदवीक
लाहाः गत्वानाकोटयनिः भनसिनीननिराः श्रीकृतामानमामिषा ॥
१० नमः श्रीवृत्तनाथाय ॥ ॥ हनकर्तृकानिः हिमनभुमनितं उकवक्रा

पिनगुः उर्ध्ववृत्तगिहसंः उमत्रकसहिगंः मस्तपानिभुसातं ॥ पितुंदं वानिवक्रं
कनगिजयधनंः सर्वहलापिपूतंः वा मयः उर्ध्वगिहसंः वृत्तगिभुतः कनः इहमर्द्धव
पत्रं ॥ दानंमदीवद्यष्टः अलिदमहयगः पत्यगामुत्रुवः नागजझापवीगः अहि
कलएतनंः मधुमालाहिरुषं ॥ जगमृकाः अयराः भित्तिभिः भिधनंः वायुवृत्त
कगिहंः हित्वादावाहनलाः अकगिः कगिनकाः गदवाहनाथः निर्विष
नगकायः नववसुतयगः सिद्धेभर्वाथराः ॥ स्वयविषयापिपूततिहृनंः वृ

[illegible]

न्याषट्प्रवाक्षः दयदयं टकः शुक्लनाकानकः वायव्याग्रिषटकः सकलनि
दहयः पाठमांसिद्धिदः ॥ पूर्वमृगविहङ्गः मन्त्रगप्रमुखः मृगमृगानृगियः
त्रिभुमस्य कृष्णभीः यदुनदिभक्तिः मित्रवर्गवृद्धाः साधिकां नृपुत्राभः ७
कलकलहवः गीवलिगैवतुलः साध्याग्रिप्रमध्यचतुनदिभक्तिः कोकात्म
धवळः ॥ आदिजानन्दपदः शृङ्गकदिगङ्गः सक्तिगधनवक्तुः दद्यादादि
यदुलः यत्रहादिगङ्गः वक्रमाहादिभक्तिः चन्दसूर्यववक्तिः त्रिगयष्टगङ्गः मधु

१ॐ नमः ॥ ३ ॥ देव नमः ॥ सदानन्द उवाच ॥ ना नवानक गेय साष्टाष्ट
मि नन्देय हा ॥ पापानिया कृदिलयः पृथ्वी वा गेवा कयं ॥ १ ॥ सा कथं तुलमीता
रूजिगावदिगा नहिः दर्भ ननापियत्ययः रूलं काटि गवांद ददु ॥ २ ॥ धना
लमा ॥ ३ ॥ जा यस्मिन् पृथ्वी दिगे वयं ॥ भल प्रमसिला यार्थः तुलमीप
यः ॥ ३ ॥ तुलमीय विविचकिः धन्यो गत्कनयलुवी ॥ कन वार्ध कलीय
चः नायकी हव हगल ॥ ४ ॥ कि कति चागि सं प्रकः ॥ अये विरव विस्तने ॥ ५ ॥

भी दलनदवमः पूजिगायन देय हा ॥ ५ ॥ गीर्थया गादि गमने ॥ कि रूत्पु
मिगावपू ॥ यच्च यं कि हत मूर्तिः तुलमी दल कामल ॥ ६ ॥ समजति दले ॥
कन वाय ह मधुल ॥ कर्षकि सजनयचः ॥ ग्या कि पतन गगि ॥ ७ ॥ स्त्री न दानं
॥ ८ ॥ ननक मवार्धनः ॥ लनी कीर्तना रूत्पुथ्वा ददि क रूल
॥ ९ ॥ तुलमी वर वल्युथं ॥ यहा वेदि ॥ १० ॥ कन वय विद्ध दिव
॥ ११ ॥ गग हस कं ॥ १२ ॥ सदस सं वनि ॥ १३ ॥ प्रजया मि ग आ हनि